DAWAT-E-ISLAMI

फ़ैज़ाने म-दनी मुज़ा-करा (क़िस्त : 7)

Paikaro Sharmo Hayaa (Hindi)

पैकरे शर्मो ह़या

(دعوتِ اسلامی)

(शो'बए फ़ैज़ाने म-दनी मुज़ा-करा)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** र-ज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه **दीनी** किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इ़ल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े ख़ोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़-ज़मत और बुज़ुर्गी वाले।

(المُستطرَف ج ١ ص ٤٠ دارالفكر بيروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

पैकरे शर्मो ह़या

येह रिसाला **(पैकरे शर्मो ह़या)**

दा'वते इस्लामी की मजलिस **''अल मदीनतुल इल्मिय्या''** ने **उर्दू** ज़बान में मुरत्तब किया है।

मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और मक-त-बतुल मदीना से शाएअ़ करवाया है। इस में अगर किसी जगह कमी बेशी पाएं तो मजलिसे तराजिम को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब, ई-मेइल या SMS) मुत्त़लअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

राबित़ा : मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी)
मक-त-बतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने, तीन दरवाज़ा, अह़मदआबाद-1, गुजरात MO. 9374031409
E-mail : translationmaktabhind@dawateislami.net

www.dawateislami.net

सब्र व शुक्र के पैकर

इस्लाम की ता'लीमात को आ़म करने के लिये अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ख़ु-लफ़ाए राशिदीन और सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने भरपूर किरदार अदा फ़रमाया। इन मुक़द्दस हस्तियों के बा'द **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब बन्दों ने अपने हुस्ने अख़्लाक़ और आ'ला किरदार के ज़रीए लोगों की इस्लाह़ का सामान फ़रमाया। **अल्लाह** वाले शुक्र और सब्र जैसी अ़ज़ीम ने'मतों से मालामाल होते हैं। इन के इर्द गिर्द का माह़ोल कैसी ही करवटें बदल रहा हो ज़िन्दगी के किसी मोड़ पर येह अपने आप को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की इत़ाअ़त व ख़ुशनूदी की शाहराह से बाल बराबर भी इधर उधर नहीं होने देते। इन्हें कोई ने'मत मिले तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का शुक्र अदा करते हैं और कोई आज़्माइश आए तो सब्र करते हैं। शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी र-ज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه **अल्लाह** वालों की तक़्वा व परहेज़ गारी से मा'मूर ज़िन्दगी का मज़्हर हैं। **आप** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के अक़्वाल व अफ़्आ़ल से ख़ौफ़े ख़ुदा और इ़श्क़े मुस्त़फ़ा की रोशनी हर सू फैल रही है। आप की साअ़तें फ़िक्रे आख़िरत में बसर होती हैं। आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ही की दी हुई म-दनी सोच ने लाखों लोगों, बिल ख़ुसूस नौ जवानों की ज़िन्दगी

www.dawateislami.net

का रुख़ सुन्नते मुस्त़फ़ा की जानिब कर दिया है। इन्हें नेकी की दा'वत की लज़्ज़त और ख़ौफ़े ख़ुदा की ह़लावत से रू शनास करवा कर सुन्नतों का आ़मिल बना दिया है। आप ने ही अपने क़ाबिले तक़्लीद सच्चे किरदार के ज़रीए दिलों में मह़ब्बते मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को रासिख़ फ़रमा कर लन्दनो पेरिस की बजाए यादे मदीना में तड़पने वाला बना दिया है। आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के मुरीदीन, मु-तअ़ल्लिक़ीन आप के अक़्वाल व अफ़्आ़ल की पैरवी को अपने लिये सआ़दत समझते हैं। बा'ज़ इस्लामी भाई तो रहन सहन, अन्दाज़े गुफ़्त-गू और लिबास वग़ैरा में भी आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की नक़्ल करने की कोशिश करते हैं। इसी लिये इस रिसाले में आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की ज़िन्दगी के कुछ ऐसे बे मिसाल वाक़िआ़त तह़रीर किये जा रहे हैं जिन्हें पढ़ कर अन्दाज़ा होगा कि आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه शरीअ़त व त़रीक़त पर अ़मल के बारे में कैसी पाबन्दी फ़रमाते हैं। नीज़ इन ह़िकायात व वाक़िआ़त से जहां नेकियों का जज़्बा नसीब होगा वहीं बहुत से ऐसे म-दनी फूल भी चुनने को मिलेंगे जिन पर अ़मल कर के बहुत से ग़ैर शर-ई उमूर से बचने का ज़ेह्न मिलेगा। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ दा'वते इस्लामी को बे शुमार तरक़्क़ियां और वुस्अ़तें अ़त़ा फ़रमाए और अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه का साया हमारे सरों पर क़ाइमो दाइम फ़रमाए।

मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या ﴾दा'वते इस्लामी﴿

शो'बए अमीरे अहले सुन्नत

10 मुह़र्रमुल ह़राम 1437 सि.हि. ब मुत़ाबिक़ 29 अक्तूबर 2015 सि.ई.

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

दुरूदे पाक की फ़ज़ीलत

सुल्ताने दो जहान, रह़मते आ़-लमिय्यान صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत निशान है : जो मुझ पर जुमुआ़ के दिन और रात **100** मर्तबा दुरूद शरीफ़ पढ़े **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस की **100 ह़ाजतें** पूरी फ़रमाएगा, **70** आख़िरत की और **30** दुन्या की और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ एक फ़िरिश्ता मुक़र्रर फ़रमा देगा जो उस **दुरूदे पाक** को मेरी क़ब्र में यूं पहुंचाएगा जैसे तुम्हें तह़ाइफ़ पेश किये जाते हैं, बिला शुबा मेरा इल्म मेरे विसाल के बा'द वैसा ही होगा जैसा मेरी ह़यात में है।

(جَمْعُ الْجَوامِع لِلسُّيُوطی، ۱۹۹/۷، حدیث:۲۲۳۵۵)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(ह़िकायत : 1) मौलाना और चाय मंगवा दूं

दा'वते इस्लामी का इब्तिदाई दौर था **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه किसी होटल में चाय पीने की ग़रज़ से तशरीफ़ ले गए। चाय पीने के बा'द **आप** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने कप में पानी डाला और हिला कर पी लिया। क़रीब बैठे चन्द नौ जवानों में से एक ने त़न्ज़िया अन्दाज़ में आवाज़ कसी "**मौलाना और चाय मंगवा दूं।**" इस जुम्ले के जवाब में अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने शफ़्क़त भरे अन्दाज़ में नज़र उठा कर उन्हें देखा

www.dawateislami.net

और मुस्कुरा दिये। क़रीब जा कर मुसा-फ़हा फ़रमाया और इन्फ़िरादी कोशिश करते हुए कुछ यूं इर्शाद फ़रमाया : मुझे मज़ीद चाय की ह़ाजत नहीं, अलबत्ता मैं ने कप में पानी डाल कर इस लिये पिया ताकि **रिज़्क़ का कोई ज़र्रा ज़ाएअ़ न हो।** आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने मज़ीद नेकी की दा'वत देते हुए इर्शाद फ़रमाया : ऐसी प्यारी प्यारी बातें दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में हर जुमा'रात को बा'दे मग़रिब बताई जाती हैं। हम भी वहां जाते हैं, आप से गुज़ारिश है कि आप भी जामेअ़ मस्जिद गुलज़ारे ह़बीब (सोल्जर बाज़ार) में होने वाले दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में ज़रूर शिर्कत कीजिये।[1]

मीठे मीठे इस्लमी भाइयो ! मज़्कूरा वाक़िए़ से जहां अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की तह़म्मुल मिज़ाजी (क़ुव्वते बरदाश्त) और ह़ुस्ने अख़्लाक़ का पता चलता है वहीं येह भी मा'लूम होता है कि अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه रिज़्क़ की कितनी क़द्र फ़रमाते हैं और इस का मा'मूली सा ज़र्रा भी ज़ाएअ़ नहीं होने देते।

रिज़्क़ की क़द्र

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! रिज़्क़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के बे

1.... येह दा'वते इस्लामी का अव्वलीन म-दनी मर्कज़ था। अब हफ़्तावार सुन्नतों भरा इज्तिमाअ़ आ़लमी म-दनी मर्कज़ फ़ैज़ाने मदीना मह़ल्ला सौदागरां पुरानी सब्ज़ी मन्डी बाबुल मदीना कराची में हर जुमा'रात बा'द नमाज़े मग़रिब शुरूअ़ हो जाता है।

www.dawateislami.net

शुमार इन्आ़मात में से एक इन्आ़म है। जिस की क़द्र हर एक पर लाज़िम है। रिज़्क़ की बे क़द्री कर के इसे ज़ाएअ़ कर देने के सबब बे ब-र-कती व तंगदस्ती की आफ़तें इन्सान को घेर लेती हैं। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ने'मतें खाना मगर उन में इसराफ़ से बचना हुक्मे इलाही है जैसा कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाता है :

كُلُوْا وَاشْرَبُوْا وَلَا تُسْرِفُوْا ۚ اِنَّهٗ لَا يُحِبُّ الْمُسْرِفِيْنَ ﴿۳۱﴾

(پ۸،الاعراف:۳۱)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : खाओ और पियो और ह़द से न बढ़ो बेशक ह़द से बढ़ने वाले उसे पसन्द नहीं।

इस आयत की तफ़्सीर में मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नई़मी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : "इसराफ़" का मा'ना है "ह़द से बढ़ना"। ह़द से बढ़ना दो त़रह़ का होता है जिस्मानी व रूह़ानी, इसी लिये गुनाह को भी इसराफ़ कहा जाता है : "رَبَّنَا اغْفِرْ لَنَا ذُنُوْبَنَا وَ اِسْرَافَنَا فِيْۤ اَمْرِنَا" यहां दोनों क़िस्म का इसराफ़ मुराद हो सकता है, जिस्मानी भी रूह़ानी भी और इस का तअ़ल्लुक़ लिबास, ग़िज़ा, पानी सब से ही है, लिहाज़ा इसराफ़ की बहुत तफ़्सीरें हैं। (1) ह़लाल चीज़ों को ह़राम जानना (2) ह़राम चीज़ों का इस्ति'माल करना (3) ज़रूरत से ज़ियादा खाना पीना या पहनना (4) जो दिल चाहे वोह खा, पी लेना या पहन लेना (5) दिन रात में बार बार खाते पीते रहना जिस से मे'दा ख़राब हो जाए बीमार पड़ जाए (6) मुज़िर और नुक़्सान देह चीज़ें खाना पीना (7) हर वक़्त

www.dawateislami.net

खाने पीने के ख़याल में रहना कि अब क्या खाऊं आयिन्दा क्या पियूं।''

मज़ीद फ़रमाते हैं : अल्लाह तआ़ला इन में से हर इसराफ़ करने वाले को ना पसन्द करता है। ऐसे लोग **अल्लाह** की बारगाह में ना मक़्बूल हैं।'' (तफ़्सीरे नईमी, जि. 8, स. 390 ब तस्र्रुफ़)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अफ़्सोस सद अफ़्सोस ! हमारे हां रिज़्क़ का इसराफ़ और बे क़द्री आ़म है। एक त़रफ़ लज़ीज़ और उ़म्दा खाने का शौक़ तो दूसरी त़रफ़ खाने का ऐसा ज़ियाअ़ कि اَلْاَمَانُ وَالْحَفِیْظ। इस के नज़ारे शादी बियाह और दीगर तक़रीबात में आ़म दिखाई देते हैं। होटलों में लज़ीज़ खाने खाना और फिर आधा खाना प्लेटों में छोड़ देना, रोटी के टुकड़े नीचे गिर जाएं तो उन्हें न उठाना वग़ैरा वग़ैरा, शायद रिज़्क़ में बे ब-र-कती की एक वज्ह येह भी है। रिज़्क़ का अदब और क़द्र बहुत ज़रूरी है और हमारे आक़ा, मक्की म-दनी मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इस की ख़ुसूसी ताकीद फ़रमाई है चुनान्चे

ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا फ़रमाती हैं : सुल्त़ाने दो जहां, वालिये कौनो मकां صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم घर तशरीफ़ लाए, रोटी का टुकड़ा पड़ा हुवा देखा तो उसे उठाया, साफ़ किया और खा लिया फिर फ़रमाया : **आ़इशा !** अच्छी चीज़ का एह़तिराम करो कि येह जब किसी क़ौम से भागी है तो लौट कर नहीं आई। (ابن ماجه،کتاب الاطعمة،باب النهی عن إلقاء الطعام،٤/٥٠،حدیث:٣٣٥٣)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हमें रिज़्क़ की क़द्र करने की तौफ़ीक़ अ़त़ा

www.dawateislami.net

फ़रमाए । खाना खाने की सुन्नतें और आदाब नीज़ रिज़्क़ की अहम्मिय्यत जानने के लिये अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की मश्हूरे ज़माना किताब "**फ़ैज़ाने सुन्नत**" का बाब "**आदाबे त़आ़म**" ख़ुद भी पढ़िये और दूसरों को भी तरग़ीब दिलाइये ।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(ह़िकायत : 2)
अमीरे अहले सुन्नत और नेकी की दा'वत

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अगर कोई बा अ़मल शख़्स जज़्बए इख़्लास के साथ नेकी की दा'वत दे तो उस के अल्फ़ाज़ में तासीर हुवा करती है । उस के ब ज़ाहिर सादा अल्फ़ाज़ भी पथ्थर दिल को नर्म कर देते हैं । अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه भी इ़ल्मो अ़मल के पैकर हैं । इसी लिये आप के सादा और ख़ुलूस से भरे अल्फ़ाज़ लाखों लोगों की हिदायत का सबब बन जाते हैं और मुआ़-शरे के बहुत से बिगड़े हुए लोग ताइब हो कर सुन्नतों के मुत़ाबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारने लगते हैं चुनान्चे

बद मआ़श की तौबा

एक बार कराची के मश्हूर अ़लाक़े कीमाड़ी में शैख़े त़रीक़त, **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه का सुन्नतों भरा बयान था । बयान के इख़्तिताम पर जब मुलाक़ात का सिल्सिला शुरूअ़ हुवा तो अ़लाक़े का एक औबाश शख़्स आया और अमीरे

www.dawateislami.net

अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के सामने फूट फूट कर रोने लगा। फिर अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه से मुलाक़ात की और रो रो कर वा'दा किया कि मैं कभी दाढ़ी नहीं मुंडाऊंगा, मुझे पता नहीं था कि मैं ऐसा शख़्स हूं जिस ने यहूदियों जैसी शक्ल बना रखी है न तो मुझे मा'लूम था और न ही आज तक किसी ने येह बताया कि दाढ़ी मुंडवाने वाला यहूदियों जैसी शक्ल वाला है। बस मैं आप से वा'दा करता हूं कि यहूदियों जैसी शक्ल नहीं बनाऊंगा बल्कि अब सुन्नत के मुताबिक़ दाढ़ी बढ़ाऊंगा। शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه फ़रमाते हैं : मुझे बा'द में लोगों ने बताया कि येह हमारे अ़लाक़े का बद मआ़श था। हम ने जान बुझ कर इसे इज्तिमाअ़ की दा'वत नहीं दी क्यूं कि हमें डर था कि अगर येह आ गया तो दंगा फ़साद कर के इज्तिमाअ़ के इन्तिज़ामात दरहम बरहम कर देगा। शायद येह ख़ुद ही बयान की आवाज़ सुन कर इज्तिमाअ़ में शरीक हुवा और यूं इस के अन्दर म-दनी इन्क़िलाब बरपा हो गया।

अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه फ़रमाते हैं : ख़ुदा जाने वोह अब ज़िन्दा भी है या नहीं ? बरसों पुरानी बात है उस ने अपने घर मेरी दा'वत की थी और सारे अहले ख़ाना को अ़त्तारी भी बनाया था। चेहरे पर दाढ़ी शरीफ़ सजाई, सर पर ज़ुल्फ़ें रखीं और गुन्डा गर्दी छोड़ कर बा अ़मल मुबल्लिग़ बन गया था।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

www.dawateislami.net

(ह़िकायत : 3)
मज़्दूर को नमाज़ की दा'वत

6 मुह़र्रमुल ह़राम 1430 सि.हि. **23** दिसम्बर 2009 ई बरोज़ जुमा'रात जब अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه **फ़ैज़ाने मदीना** पहुंचे तो जमाअ़त खड़ी होने वाली थी जब कि सामने छत पर मज़्दूर काम में मगन हथोड़े चला रहे थे। जब आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने मज़्दूरों को देखा तो ठहर गए और बुलन्द आवाज़ से सदा लगा कर यूं **नेकी की दा'वत** पेश फ़रमाई : जमाअ़त खड़ी होने वाली है, **मज़्दूर इस्लामी भाई** भी नमाज़ अदा फ़रमा लें।

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! नमाज़ के लिये जाते हुए लोगों को नमाज़ की दा'वत देना **अल्लाह** वालों का पसन्दीदा काम है। शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने हमें म-दनी इन्आ़म भी अ़त़ा फ़रमाया है कि "क्या आज आप ने पांचों नमाज़ें मस्जिद की पहली सफ़ में तक्बीरे ऊला के साथ बा जमाअ़त अदा फ़रमाईं ? नीज़ हर बार किसी एक को अपने साथ मस्जिद ले जाने की कोशिश फ़रमाई ?" लिहाज़ा इस म-दनी इन्आ़म पर अ़मल की निय्यत फ़रमा लीजिये।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(ह़िकायत : 4)
इयादत की तरग़ीब

5 मुह़र्रमुल ह़राम 1431 हि. **23** दिसम्बर 2010 बरोज़

www.dawateislami.net

बुध कमो बेश दो पहर 02:25 पर नमाज़े ज़ोह्र की अदाएगी के बा'द दो इस्लामी भाई अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की बारगाह में आप के घर ह़ाज़िर हुए तो देखा कि एक इस्लामी भाई अन्दर आराम कर रहे हैं। अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने उन दोनों से फ़रमाया : येह रोज़े से हैं लेकिन इस वक़्त इन्हें बुख़ार के साथ साथ इस्हाल की भी शिकायत है। मैं ने इन की **इयादत** कर के रोज़ा पूरा करने की तरग़ीब दिलाई है। आप दोनों भी **इयादत** फ़रमा लीजिये मगर येह न बताइयेगा कि मैं ने ऐसा करने को कहा है बल्कि अपने त़ौर पर मा'लूम कर के **इयादत** करेंगे तो इस से उन की ज़ियादा **दिलजूई** होगी।

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने इस वाक़िए में कैसी ह़िक्मते अ़-मली से नेकी पर इस्तिक़ामत इख़्तियार करने की तल्क़ीन का त़रीक़ा सिखाया है। हमें भी चाहिये कि किसी बीमार इस्लामी भाई को खड़े हो कर नमाज़ पढ़ता देखें या बीमारी के बा वुजूद रोज़ा रखने वाले इस्लामी भाई से मिलें तो उस की ह़ौसला अफ़्ज़ाई करें और नेकी पर इस्तिक़ामत की तल्क़ीन करें। इस वाक़िए में इयादत का भी ज़िक्र है जो कि सुन्नत है नीज़ इस का कसीर अज्रो सवाब भी है चुनान्चे

नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : **मुसल्मान जब अपने मुसल्मान भाई की इयादत करता है तो जन्नत के बाग़ में रहता है ह़त्ता कि लौट आए।**

(مسلم،کتاب البر والصلة،باب فضل عيادة المريض،ص ١٣٨٨،حديث:٢٥٦٨)

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत है

www.dawateislami.net

कि रसूले अकरम, शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : मुसल्मान के मुसल्मान पर छ⁶ ह़क़ हैं। अ़र्ज़ की गई : **या रसूलल्लाह** वोह क्या ? फ़रमाया : जब तुम उस से मिलो तो उसे सलाम करो, जब दा'वत दे तो क़बूल करो और जब तुम से ख़ैर ख़्वाही चाहे तो करो, जब छींके और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ह़म्द करे तो उस का जवाब दो, **जब बीमार हो तो इ़यादत** करो और जब फ़ौत हो जाए तो (उस के जनाज़े के) साथ जाओ।

(مسلم، کتاب السلام، باب من حق المسلم للمسلم، ص ١١٩٢، حدیث:٢١٦٢)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हमें चाहिये कि इस सुन्नत को भी आ़म करें। अ़ज़ीज़ो अक़्रिबा, दोस्त अह़बाब या पड़ोस में कोई बीमार हो जाए और कोई मानेए़ शर-ई़ भी न हो तो कोशिश फ़रमा कर ज़रूर इ़यादत की तरकीब बनानी चाहिये। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमें सुन्नतों पर अ़मल की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए।

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(ह़िकायत : 5)
कम नम्बर वालों को तोह़फ़ा

28 ज़ुल क़ा'दतुल ह़राम 1429 हि. बरोज़ बुध ब मक़ाम आ़लमी म-दनी मर्कज़ फ़ैज़ाने मदीना (स्टूडियो) में जामिअ़तुल मदीना के त़-लबा जम्अ़ थे। बा'दे स-ह़री अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ ने फ़रमाया : आप लोगों की मा'लूमात में कोई

www.dawateislami.net

ऐसा त़ालिबे इल्म है जिस ने सब से **कम नम्बर** लिये हों ? ताकि मैं उस को तोह़फ़ा भिजवाऊं.....! (सब ह़ैरान हुए कि आ'ला नम्बर वालों को तह़ाइफ़ व तह़्सीन से नवाज़ा जाता है और यहां कम नम्बर वालों को तह़ाइफ़ से नवाज़ने की बात हो रही है) फिर आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने ख़ुद ही इस की येह ह़िक्मत इर्शाद फ़रमाई : ऐसा करने से उस त़ालिबे इल्म की दिलजूई होगी और اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ वोह अज़् सरे नौ हिम्मत कर के पढ़ाई पर कमर बस्ता हो जाएगा।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! किसी मुसल्मान की दिलजूई कर के उसे नेकियों की जानिब माइल करना यक़ीनन मह़मूद है। अगर कभी किसी फ़र्द से कोई मा'मूली ग़-लत़ी हो जाए जिस पर वोह शर्मिन्दा भी हो इस के बा वुजूद सभी उस पर बरस पड़ें, ऐसे में अगर कोई आगे बढ़ कर उसे सीने से लगा ले और अच्छे अन्दाज़ में समझा दे तो उस के दिल में उस ख़ैर ख़्वाह की जगह ख़ुद ब ख़ुद बन जाती है। अब अगर येह इस्लामी भाई उसे नेकी की दा'वत या किसी सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में शिर्कत की दा'वत दे तो वोह उसे टाल न सकेगा। अपने मुसल्मान भाई को एह़सासे कम-तरी से बचाने का दर्स तो हमें प्यारे नबी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सीरते त़य्यिबा से भी मिलता है चुनान्चे

एक मर्तबा ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه मिस्वाक तोड़ने के लिये दरख़्त पर चढ़े। आप की

www.dawateislami.net

पिंडलियां दुबली पतली थीं। अचानक हवा चलने से (कपड़ा हट गया और) पिंडलियां नज़र आने लगीं। लोग देख कर हंस पड़े। बे कसों के ग़म ख़्वार, शफ़ीए रोज़े शुमार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने देखा तो फ़रमाया : तुम क्यूं हंस रहे हो ? उन्हों ने अर्ज़ की : **या नबिय्यल्लाह** ! इन की कमज़ोर पिंडलियां देख कर। **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : उस ज़ात की क़सम ! जिस के क़ब्ज़ए क़ुदरत में मेरी जान है, येह दोनों पिंडलियां मीज़ान पर उहुद पहाड़ से ज़ियादा वज़्नी है।

(مسند احمد، مسند عبدالله بن مسعود، ۲/ ۱۰۲، حدیث: ۳۹۹۱)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(हिकायत : 6)
शादी में फ़िक्रे आख़िरत का अन्दाज़

यकुम र-मज़ानुल मुबारक 1430 हि. बा'द नमाज़े इशा आ़लमी म-दनी मर्कज़ फ़ैज़ाने मदीना बाबुल मदीना कराची में अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के छोटे बेटे हाजी अबू हिलाल मुहम्मद बिलाल रज़ा अ़त्तारी अल म-दनी مَدَّظِلُّهُ الْعَالِي का निकाह़ हुवा। बा'दे निकाह़ **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه जब नीचे मक्तब में चन्द इस्लामी भाइयों के पास तशरीफ़ लाए जिन में मुफ़्तियाने किराम भी शामिल थे। सब ने आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه को मुबारक बाद देना शुरूअ़ की मगर अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के चेहरे पर ख़ुशी के आसार ज़ाहिर होने के बजाए अफ़्सुर्दगी छा गई और आप ने सब को मुख़ातब करते हुए इर्शाद फ़रमाया : मैं ने

www.dawateislami.net

इस वक़्त फूलों के हार पहन रखे हैं, मेरा बेटा भी ख़ुश है आप सब भी ख़ुश हो रहे हैं मगर मुझे फूलों के येह हार **मौत** की याद दिला रहे हैं। येह फ़रमाते हुए आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه बे इख़्तियार रोने लगे येह सिल्सिला काफ़ी देर तक जारी रहा। इसी दौरान एक ना'त ख़्वां इस्लामी भाई ने **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के कलाम का येह पुरसोज़ शे'र पढ़ना शुरूअ़ किया :

फूंक दे जो मेरी ख़ुशियों का नशेमन आक़ा

चाक दिल, चाक जिगर सोज़िशे सीना दे दो

तो शु-रका पर भी रिक़्क़त त़ारी हो गई।

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! **अल्लाह** वालों की म-दनी सोच के क्या कहने ! ख़ुशी हो या ग़म हर वक़्त मौत को याद रखते हैं। इन की कोशिश होती है कि कोई लम्हा फ़िक्रे आख़िरत से ग़फ़्लत में न गुज़र जाए। चुनान्चे अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का एक ईमान अफ़्रोज़ वाक़िआ़ मुला-ह़ज़ा फ़रमाइये :

सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ईद

ईद के दिन चन्द ह़ज़रात मकाने आ़लीशान पर ह़ाज़िर हुए तो क्या देखा कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ दरवाज़ा बन्द कर के ज़ारो क़ित़ार रो रहे हैं। लोगों ने ह़ैरान हो कर अ़र्ज़ की, या अमीरल मुअमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ! आज तो ईद है जो कि ख़ुशी मनाने का

www.dawateislami.net

दिन है, ख़ुशी की जगह येह रोना कैसा ? आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने आंसू पोंछते हुए फ़रमाया : ''هٰذَا يَوْمُ الْعِيْدِ وَ هٰذَا يَوْمُ الْوَعِيْد'' या'नी ऐ लोगो ! येह ईद का दिन भी है और वईद का दिन भी। आज जिस के नमाज़ व रोज़ा मक़्बूल हो गए बिला शुबा उस के लिये आज ईद का दिन है। लेकिन जिस के नमाज़ व रोज़ा को रद कर के उस के मुंह पर मार दिया गया हो उस के लिये तो आज वईद ही का दिन है। और मैं तो इस ख़ौफ़ से रो रहा हूं कि आह ! اَنَا لَا اَدْرِیْ اَ مِنَ الْمَقْبُوْلِيْنَ اَمْ مِنَ الْمَطْرُوْدِيْنَ۔ या'नी मुझे येह मा'लूम नहीं कि मैं मक़्बूल हुवा हूं या रद कर दिया गया हूं।

(फ़ैज़ाने सुन्नत, जि. 1, स. 1302)

ईद के दिन उ़मर येह रो रो कर बोले नेकों की ईद होती है

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(ह़िकायत : 7)
मस्जिद की सफ़ाई का एहतिमाम

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मस्जिदें मुसल्मानों के नज़्दीक क़ाबिले एह़तिराम और मुक़द्दस मक़ामात में से हैं। इन का अ-दबो एह़तिराम करना और इन्हें हर क़िस्म की गन्दगी से पाको साफ़ रखना हर मुसल्मान पर लाज़िम है। शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه मस्जिद की सफ़ाई का किस क़दर एहतिमाम

www.dawateislami.net

फ़रमाते हैं चुनान्चे तीन वाक़िआ़त मुला-हज़ा फ़रमाइये :

(वाक़िआ़ : 1) यकुम र-मज़ानुल मुबारक 1430 हि. अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه मस्जिद में तशरीफ़ फ़रमा थे । एक इस्लामी भाई ने **आप** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه को **चादर** पेश की । अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने देखा कि चादर पर किसी चीज़ के बारीक ज़र्रात लगे हुए हैं । **आप** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने **चादर** उन इस्लामी भाई को देते हुए इर्शाद फ़रमाया : इसे मस्जिद से बाहर झाड़ कर लाइये वरना येह **ज़र्रात** मस्जिद में गिरेंगे ।

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बसा अवक़ात छोटी छोटी बातें जिन की त़रफ़ आ़म लोगों का ध्यान नहीं जाता लेकिन **अल्लाह** वाले उन का ऐसा ख़याल फ़रमाते हैं कि ज़बान से बे साख़्ता مَاشَآءَاللّٰه और سُبْحٰنَ اللّٰه के कलिमात अदा हो जाते हैं । मिसाल के त़ौर पर मस्जिद में दाख़िल होते वक़्त जूते तो सभी झाड़ते हैं मगर पाउं पर लगी गर्द की त़रफ़ हमारा ध्यान ही नहीं जाता मगर अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه का अन्दाज़ सब से मोह़तात़ है चुनान्चे

(वाक़िआ़ : 2) एक इस्लामी भाई का बयान है कि एक बार शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने मस्जिद में दाख़िल होने से क़ब्ल जूते उतारे, दोनों पाउं कपड़े से साफ़ किये और फिर मस्जिद में दाख़िल हुए । (11 जून 2015 बरोज़ जुमा'रात के ख़ुसूसी) म-दनी मुज़ा-करे में इस की वज्ह बयान करते हुए इर्शाद फ़रमाया : मैं मस्जिद में दाख़िल होते वक़्त कपड़े से अपने

www.dawateislami.net

पाउं साफ़ कर लेता हूं ताकि मिट्टी का कोई ज़र्रा मस्जिद में न चला जाए।

(वाक़िआ : 3) अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने म-दनी मुज़ा-करे के दौरान इर्शाद फ़रमाया : मैं सुन्नत पर अ़मल की निय्यत से दाढ़ी और भंवों पर भी तेल लगाता हूं लेकिन उसे ख़ूब अच्छी त़रह़ साफ़ कर लेता हूं ताकि इस तेल की चिक्नाहट से मस्जिद का फ़र्श आलूदा न हो जाए। **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه को अक्सर देखा गया कि जेब में शॉपर रखते हैं और मस्जिद के फ़र्श पर गिरे हुए बाल व **ज़र्रात** वग़ैरा उठा कर उस में डालते रहते हैं और कभी कभी ज़ाइद शॉपर भी रखते हैं जो कि दूसरे इस्लामी भाइयों को तरग़ीब दिला कर तोह़फ़े में पेश फ़रमाते और इस त़रह़ मस्जिद से **ज़र्रात** वग़ैरा उठाने का ज़ेह्न बनाते हैं।

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इल्मे दीन से दूरी के बाइ़स अब तो येह ह़ाल है कि छालिया और टॉफ़ियों के रेपर मस्जिद में पड़े दिखाई देते हैं तो कभी सफ़ाई के दौरान सफ़ों के नीचे से बरआमद होते हैं ह़ालां कि मस्जिद में मा'मूली सा ज़र्रा भी गिर जाए तो इस से मस्जिद को तक्लीफ़ होती है जैसा कि ह़ज़रते सय्यिदुना **शैख़ अ़ब्दुल ह़क़** मुह़द्दिस देहलवी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं : "मस्जिद में अगर तिन्का भी फेंका जाए तो इस से मस्जिद को इस क़दर तक्लीफ़ पहुंचती है जिस क़दर तक्लीफ़ इन्सान को अपनी आंख में तिन्का पड़ जाने से होती है।" (جذب القلوب، ص۲۲۲)

www.dawateislami.net

इस लिये हमें मस्जिद की सफ़ाई को अपने लिये सआ़दत समझना चाहिये कि मु-तअ़द्दिद अह़ादीसे मुबा-रका में इस की तरग़ीब इर्शाद फ़रमाई गई चुनान्चे तीन रिवायात मुला-ह़ज़ा फ़रमाइये :

(1) जो मस्जिद से तक्लीफ़ देह चीज़ निकालेगा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस के लिये जन्नत में एक घर बनाएगा।

(ابن ماجه، كتاب المساجد والجماعات، باب تطهير المساجد الخ، ۱/۴۱۹، حديث:۷۵۷)

(2) मस्जिदें बनाओ और इन में से गर्दो ग़ुबार निकाल दिया करो कि जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के लिये मस्जिद बनाएगा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस के लिये जन्नत में एक घर बनाएगा। एक शख़्स ने अ़र्ज़ किया : **या रसूलल्लाह !** क्या मस्जिदें गुज़र गाहों पर बनाई जाएं ? इर्शाद फ़रमाया : हां ! और इन में से गर्दो ग़ुबार साफ़ करना हूरे ईन का महर है। (مجمع الزوائد، كتاب الصلوة، باب بناء المسجد، ۲/۱۱۳، حديث:۱۹۴۹)

(3) **ह़ज़रते** सय्यिदुना उ़बैद बिन मरज़ूक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि मदीने शरीफ़ में एक औ़रत मस्जिद की सफ़ाई किया करती थी, जब उस का इन्तिक़ाल हुवा तो नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को इस के बारे में ख़बर न दी गई। एक मर्तबा हुज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم उस की क़ब्र के क़रीब से गुज़रे तो दरयाफ़्त फ़रमाया : येह किस की क़ब्र है ? तो सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ किया, उम्मे मिह्जन की। फ़रमाया : वोही जो मस्जिद की सफ़ाई किया करती थी ? सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ किया, : जी हां "आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने लोगों को

www.dawateislami.net

उस की क़ब्र पर सफ़ बनाने का हुक्म दिया और उस की नमाज़े जनाज़ा पढ़ाई। फिर उस औरत को मुख़ातब कर के फ़रमाया कि "तूने कौन सा काम सब से अफ़्ज़ल पाया ?" सहाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم ने अ़र्ज़ किया **"या रसूलल्लाह !** क्या येह सुन रही है ?" इर्शाद फ़रमाया : तुम इस से ज़ियादा सुनने वाले नहीं हो।" रावी बयान करते हैं कि फिर रसूले अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : इस ने मेरे सुवाल के जवाब में कहा : "मस्जिद की सफ़ाई"

(الترغیب والترھیب، کتاب الصلوۃ، الترغیب فی تنظیف المساجد وتطھیرھا الخ، ۱/۱۴۹، حدیث: ۴۳۰)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(ह़िकायत : 8)
माले वक़्फ़ की ह़िफ़ाज़त

येह उन दिनों का वाक़िआ़ है जब **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ ने आ़लमी म-दनी मर्कज़ फ़ैज़ाने मदीना को आबाद करने के लिये ओल्ड सिटी एरिया को छोड़ कर पीर इलाही बख़्श कॉलोनी में रिहाइश इख़्तियार फ़रमाई। आप دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ कमो बेश एक किलो मीटर पैदल सफ़र फ़रमा कर फ़ैज़ाने मदीना में बा जमाअ़त नमाज़ अदा फ़रमाते। अभी आ़लमी म-दनी मर्कज़ फ़ैज़ाने मदीना बाबुल मदीना कराची की ता'मीर जारी थी। एक दिन घर से तशरीफ़ लाते हुए अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ ने जेब से एक कंकर निकाला और बजरी के ढेर में शामिल फ़रमा दिया।

www.dawateislami.net

और यूं इर्शाद फ़रमाया : जब मैं घर पहुंचा तो मुझे महसूस हुवा कि फ़ैज़ाने मदीना की ता'मीर में इस्ति'माल होने वाली इस बजरी का एक कंकर इत्तिफ़ाक़ से मेरी चप्पल में फंस गया है मैं ने इसे वापस ला कर इसी बजरी में डाल दिया है।

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आपने ! अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه माले वक़्फ़ के मु-तअ़ल्लिक़ किस क़दर एह़तियात़ फ़रमाते हैं कि एक मा'मूली कंकर भी ज़ाएअ़ नहीं होने देते। **अल्लाह** वालों का शुरूअ़ से ही मा'मूल रहा है कि वोह वक़्फ़ की इम्लाक व अम्वाल के बारे में बहुत हुस्सास होते हैं मबादा हम से कोई मा'मूली ज़र्रा भी ज़ाएअ़ न हो जाए कि बरोज़े क़ियामत इस के ह़िसाब का सामना करना पड़ जाए चुनान्चे अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का एक ईमान अफ़्रोज़ वाक़िआ़ मुला-ह़ज़ा फ़रमाइये :

फ़ारूक़े आ'ज़म की ज़ौजा और ख़ुश्बू का वज़्न

ह़ज़रते सय्यिदुना इस्माईल बिन मुह़म्मद رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : एक बार अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के पास बह़रीन से कस्तूरी और अ़म्बर लाया गया। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मेरी ख़्वाहिश है कि कोई बेहतरीन वज़्न करने वाली औ़रत मिल जाए जो इस का वज़्न कर दे तो मैं इसे मुसल्मानों में

www.dawateislami.net

तक़्सीम दूं । आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ज़ौजा ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़तिका बिन्ते ज़ैद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने अ़र्ज़ किया : मैं भी बहुत अच्छा वज़्न कर लेती हूं, मुझे दीजिये मैं वज़्न कर देती हूं। ह़ज़रते सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उन्हें मन्अ़ फ़रमा दिया। वज्ह पूछी तो इर्शाद फ़रमाया : मुझे इस बात का डर है कि वज़्न करते हुए येह कस्तूरी व अ़म्बर तुम्हारे हाथ पर भी लग जाएगा और तुम इसे अपने सर और गरदन पर मल लो और मुझे मुसल्मानों के ह़िस्से से ज़ियादा मिल जाए।

(الزھد لاحمد،زھد عمر بن الخطاب،ص۱٤۷،رقم:٦۲۳)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(ह़िकायत : 9) पैकरे शर्मो ह़या

ग़ालिबन 1409 हि. की बात है कि **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ के पाउं में **फ़्रेक्चर** हो गया। आप के **इब्तिदाई दौर** के एक इस्लामी भाई का कहना है कि हम आप को एक डॉक्टर के पास ले गए। डॉक्टर ने **प्लास्तर** करना चाहा और आप के पाजामे के पाइंचे ज़ियादा ऊपर करने का कहा तो अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ ने फ़रमाया : **फ़्रेक्चर** पिंडली में है इस लिये मैं घुटने से ऊपर कपड़ा नहीं करूंगा क्यूं कि बिला ज़रूरत सित्र

www.dawateislami.net

खोलने की शरअ़न इजाज़त नहीं और नाफ़ से ले कर घुटने तक का हिस्सा सित्रे औरत है, जिस का छुपाना ज़रूरी है, चुंकि घुटने से ऊपर कपड़ा किये बिग़ैर पिंडली पर **प्लास्तर** मुम्किन है तो फिर बिला हाजत सित्र क्यूं ज़ाहिर होने दूं। आख़िर कार घुटने पर से कपड़ा हटाए बिग़ैर **प्लास्तर** कर दिया गया।

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! म-दनी माहोल मुयस्सर न होने की वज्ह से इल्मे दीन से दूरी की बिना पर दीगर कई मुआ़-मलात की त़रह़ इलाज के मुआ़-मले में भी मुसल्मानों की एक ता'दाद बे एह़तियाती का शिकार नज़र आती है। बिला ज़रूरत आ'ज़ाए सित्र को खोल देना, मर्द के होते हुए नर्स से इन्जेक्शन लगवाने का मुता़-लबा करना या औरतों का लेडी डॉक्टर को छोड़ कर मर्द से इलाज करवाना अ़जीब तर है। ह़ालां कि मर्द का औरत से और औरत का मर्द से पर्दा है और बिला ज़रूरते शर-ई सित्र खोलना या किसी के सित्र की त़रफ़ नज़र करना ना जाइज़ व ह़राम है चुनान्चे सदरुश्शरीअ़ह, मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : मर्द मर्द के हर हिस्सए बदन की त़रफ़ नज़र कर सकता है सिवा उन आ'ज़ा के जिन का सित्र ज़रूरी है। वोह नाफ़ के नीचे से घुटने के नीचे तक है कि इस हिस्सए बदन का छुपाना फ़र्ज़ है, जिन आ'ज़ा का छुपाना ज़रूरी है उन को **औरत** कहते हैं। किसी को घुटना खोले हुए देखे तो उसे मन्अ़ करे और रान खोले हुए देखे तो सख़्ती से मन्अ़ करे और शर्मगाह खोले हुए हो तो उसे सज़ा दी जाएगी। (बहारे शरीअ़त, जि. 3, स. 442)

www.dawateislami.net

डॉक्टरों और त़बीबों को बिल ख़ुसूस येह मस्अला ख़ूब ज़ेह्न नशीन कर लेना चाहिये कि किस सूरत में मरीज़ के आ'ज़ाए सित्र की जानिब नज़र करना जाइज़ और कब मम्नूअ़ है। चुनान्चे "बहारे शरीअ़त" में है : **त़बीब को** ब वक़्ते ज़रूरते शर-ई पर्दे की जगह का सिर्फ़ वोह हिस्सा देखना जाइज़ है जिस के देखने की ज़रूरत है ज़ियादा नहीं। (बहारे शरीअ़त, जि. 3, स. 1081)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه का मज़्कूरा त़र्ज़े अ़मल क़ाबिले तक़्लीद और लाइक़े तह्सीन है। आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने ऐसे अह्सन अन्दाज़ में त़बीब को नसीह़त फ़रमाई कि उस ने आप की बात मान ली।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(ह़िकायत : 10)
नर्स से इन्जेक्शन नहीं लगवाया

एक बार मदीने शरीफ़ की ह़ाज़िरी के दौरान **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه को बस में खड़े हो कर सफ़र करना पड़ा। दौराने सफ़र अचानक त़बीअ़त कुछ ख़राब हुई और अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه बस में गिर गए। डॉक्टर के पास ले जाया गया। उस ने मुआ़-यना करने के बा'द नर्स से इन्जेक्शन लगाने को कहा। अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने फ़रमाया : मैं मर्द से ही इन्जेक्शन लगवाऊंगा। आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के इन्कार पर

www.dawateislami.net

डॉक्टर ने हैरान हो कर कहा : अब तो मर्द खुद मुता-लबा करते हैं कि औरत इन्जेक्शन लगाए और हैरत है आप नर्स से इन्जेक्शन नहीं लगवा रहे ?

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! शैखे़ त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की मायानाज़ तालीफ़ ''पर्दे के बारे में सुवाल जवाब'' सफ़ह़ा 171 से इलाज के बारे में कुछ म-दनी फूल मुला-हज़ा फ़रमाइये :

क्या औरत डॉक्टर के पास जा सकती है ?

सुवाल : औरत क्या मर्द डॉक्टर को नब्ज़ दिखा सकती है ?

जवाब : अगर लेडी डॉक्टर से इलाज मुम्किन न रहे तो अब मर्द डॉक्टर से रुजूअ़ करने की इजाज़त है। ज़रूरतन वोह मर्द डॉक्टर मरीज़ा को देख भी सकता है और मरज़ की जगह को छू भी सकता है, मगर मर्द डॉक्टर के सामने औरत सिर्फ़ ज़रूरत का हिस्सए जिस्म खोले। डॉक्टर भी अगर ग़ैर ज़रूरी हिस्से पर क़स्दन नज़र करेगा या छूएगा तो गुनहगार होगा। इन्जेक्शन वग़ैरा औरत के ज़रीए लगवाए कि यहां उ़मूमन मर्द की ह़ाजत नहीं होती।

औरत का मर्द से इन्जेक्शन लगवाना ?

सुवाल : अगर नर्स न हो और इन्जेक्शन लगवाना ज़रूरी हो तो औरत क्या करे ?

जवाब : सह़ीह़ मजबूरी की सूरत में ग़ैर मर्द से लगवा ले।

www.dawateislami.net

मर्द का नर्स से इन्जेक्शन लगवाना

सुवाल : क्या मर्द नर्स से इन्जेक्शन लगवा सकता है ?

जवाब : न इन्जेक्शन लगवा सकता है, न पट्टी बंधवा सकता है, न ब्लड़ प्रेशर नपवा सकता है, न टेस्ट करवाने के लिए ख़ून निकलवा सकता है। अल ग़रज़ बिला इजाज़ते शर-ई मर्द व औ़रत को एक दूसरे का बदन छूना ह़राम और जहन्नम में ले जाने वाला काम है।

सर में लोहे की कील

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : ''तुम में से किसी के सर में लोहे की कील का ठोंक दिया जाना इस से बेहतर है कि वोह किसी ऐसी औ़रत को छुए जो उस के लिये ह़लाल नहीं।''

(معجم کبیر،ابوالعلاء یزید بن عبداللہ الخ، ۲۰/۲۱۱، حدیث:۴۸۶)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(ह़िकायत : 11)
निगाहों की ह़िफ़ाज़त के लिये

''ह़िमा'' क़ाइम फ़रमाई

एक बार अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने एक इस्लामी भाई से तरग़ीबन इर्शाद फ़रमाया : **मैं ने** अपने कमरे में आगे और पीछे दीवार से पहले ''**ह़िमा**'' क़ाइम कर ली है। फिर ''**ह़िमा**''की वज़ाह़त करते हुए इर्शाद फ़रमाया : दर अस्ल बादशाहों

www.dawateislami.net

की ज़मीन के गिर्द एक ह़द क़ाइम कर दी जाती है ताकि जानवर वग़ैरा बादशाह के बाग़ में ज़मीन से दूर रहें और वोह जगह जानवरों के नुक़्सान पहुंचाने से मह़फ़ूज़ रहे इस ह़द (Boundry Line) को "**ह़िमा**" कहते हैं। मैं ने अपने कमरे की दीवार की खिड़कियों से कुछ पहले एक ह़द क़ाइम कर ली है कि इस से आगे नहीं जाऊंगा ताकि खिड़की से दूर रह कर तह़फ़्फ़ुज़ ह़ासिल रहे वरना खिड़की से बाहर नज़र डालने की सूरत में किसी औ़रत या अम्रद पर नज़र पड़ सकती है, इस लिये मैं ने अपने लिये यूं "**ह़िमा**" मुक़र्रर कर ली है।

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! फ़राइज़ो वाजिबात की पाबन्दी के साथ साथ मुस्तह़ब्बात पर अ़मल नीज़ ख़िलाफ़े औला और मुश्तबा उमूर के इरतिकाब से ख़ुद को बचाने की कोशिश करना **अल्लाह** वालों का त़रीक़ा है। रिज़ाए इलाही عَزَّوَجَلَّ के त़लब गारों की ज़िन्दगी तक़्वा व परहेज़ गारी में बसर होती है और जिस काम में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ना फ़रमानी का ज़रा सा शुबा भी हो तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मक़्बूल बन्दे वोह काम करने से डरते हैं। इस ज़िम्न में एक ईमान अफ़रोज़ ह़िकायत मुला-ह़ज़ा फ़रमाइये चुनान्चे

सच्चा वरअ़

ह़ज़रते सय्यिदुना बिश्रे ह़ाफ़ी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की हमशीरा ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अह़मद बिन ह़म्बल رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के पास तशरीफ़ लाईं और कहने लगीं : हम अपने मकान की छत पर सूत

www.dawateislami.net

कातती हैं और "**ज़ाहिरिय्यह**" की मश्अ़लें गुज़रती हैं जिन की शुआ़एं हम पर पड़ती हैं क्या उन की शुआ़ओं में हमारे लिये सूत कातना जाइज़ है ?" ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अह़मद बिन ह़म्बल رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने पूछा : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुम्हें मुआ़फ़ फ़रमाए, तुम कौन हो ? उन्हों ने फ़रमाया : मैं बिश्रे ह़ाफ़ी की बहन हूं। ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अह़मद बिन ह़म्बल رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه रो पड़े और फ़रमाया : सच्चा वरअ़ तो तुम्हारे घर से निकलता है तुम उन की शुआ़ओं में सूत न कातना।"

(الرسالة القشيرية،الفصل الاول، باب الورع،ص١٤٨)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(ह़िकायत : 12)
अनोखी एह़्तियात़

एक बार अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه **ने फ़रमाया :** मैं जब बैरूने मुल्क जाता हूं तो यहां की इस्ति'माली घड़ी का सेल निकाल देता हूं ताकि बिला ज़रूरत सेल इस्ति'माल न होता रहे क्यूं कि उस में वक़्त देखने की ज़रूरत ही नहीं रहती।

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! येह अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه का कमाले तक़्वा और एह़्तियात़ है कि जिस घड़ी से वक़्त देखने की ज़रूरत न रही उस का सेल भी निकाल दिया कि बिला ज़रूरत इस्ति'माल न होता रहे। बसा अवक़ात छोटी छोटी बे

www.dawateislami.net

एह़तियातियां इन्सान को गुनाह में मुब्तला कर देती हैं इस लिये हमें चाहिये दुकान में हों या मकान में अपनी अश्या का जाएज़ा लेते रहें कि कोई चीज़ बिला ज़रूरत तो इस्ति'माल नहीं हो रही जैसे कमरे से उठे और पंखा चलता ही रहने दिया। याद रहे ! क़ियामत के दिन हर ने'मत के बारे में सुवाल किया जाएगा।

मुफ़स्सिरे शहीर **ह़कीमुल उम्मत** ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْحَنَّان आयते मुबा-रका "ثُمَّ لَتُسْـَٔلُنَّ یَوْمَىٕذٍ عَنِ النَّعِیْمِ" (پ۳۰،التکاثر،آیت:۸) के तह़्त येह भी फ़रमाते हैं : येह सुवाल हर ने'मत के मु-तअ़ल्लिक़ होगा, जिस्मानी या रूह़ानी, ज़रूरत की हो या ऐ़शो राह़त की ह़त्ता कि ठन्डे पानी, दरख़्त के साए, राह़त की नींद का भी। (नूरुल इ़रफ़ान, स. 956)

बिजली के मुआ़-मले में की जाने वाली बे एह़तियातियों से बचने और बिजली बचाने के त़रीक़े सीखने के लिये अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ के रिसाले "बिजली इस्ति'माल करने के म-दनी फूल" का मुत़ा-लआ़ कीजिये।

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(ह़िकायत : 13)
समझाने का बेहतरीन त़रीक़ा

5 मुह़र्रमुल ह़राम 1431 हि. मुत़ाबिक़ **23** दिसम्बर **2009** ई. बरोज़ बुध स-ह़री के वक़्त एक इस्लामी भाई तश्बीक कर के

www.dawateislami.net

या'नी एक हाथ की उंग्लियां दूसरे हाथ की उंग्लियों में डाल कर बैठे थे। अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने उन्हें सब के सामने समझाने की बजाए ऐसा त़रीक़ा इख़्तियार फ़रमाया कि वोह शर्मिन्दगी से भी महफ़ूज़ रहे और न सिर्फ़ उन की इस्लाह़ हो गई बल्कि बहुत से इस्लामी भाइयों को मस्अला भी मा'लूम हो गया। चुनान्चे अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने इज्तिमाई त़ौर पर यूं मस्अला बयान फ़रमाया : नमाज़ में या नमाज़ के इन्तिज़ार में एक हाथ की उंग्लियां दूसरे हाथ की उंग्लियों में डालना **मक्रूहे तह़रीमी** है। इस से बचने की **आ़दत** बनाइये। इस के लिये बार बार तवज्जोह रख कर उंग्लियां निकालना होंगी। वरना **आ़दत** निकलना मुश्किल है।

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! यहां नमाज़ के दो मस्अले भी समझ लीजिये :

उंग्लियां चटख़ाना और तश्बीक

(1) नमाज़ के दौरान उंग्लियां चटख़ाना मक्रूहे तह़रीमी है और तवाबेए़ नमाज़ में म-सलन नमाज़ के लिये जाते हुए, नमाज़ का इन्तिज़ार करते हुए भी उंग्लियां चटख़ाना मक्रूह है।

(बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 623 मुलख़्ख़सन)

(ب) ख़ारिजे नमाज़ में (या'नी तवाबेए़ नमाज़ में भी न हो) बिग़ैर ह़ाजत के उंग्लियां चटख़ाना मक्रूहे तन्ज़ीही है।

(ج) ख़ारिजे नमाज़ में किसी ह़ाजत के सबब म-सलन उंग्लियों को आराम देने के लिये उंग्लियां चटख़ाना मुबाह़ (या'नी बिला

www.dawateislami.net

कराहत जाइज़) है।

(2) तश्बीक या'नी एक हाथ की उंग्लियां दूसरे हाथ की उंग्लियों में डालना नमाज़ के लिये जाते वक़्त और नमाज़ के इन्तिज़ार में भी मक्रूहे तह़रीमी है। (नमाज़ के अह़काम, स. 250 मुलख़्ख़सन)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

बरदाश्त की कुव्वत पैदा कीजिये

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इल्मे दीन से दूरी के बाइस कुछ लोग शैत़ान के बहकावे में आ कर नेकी की दा'वत देने वाले और दर्सो बयान के ज़रीए अपनी और दूसरे लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करने वाले इस्लामी भाइयों को इस म-दनी काम से रोकने के ह़ीले बहाने बनाते रहते हैं। ऐसे नाज़ुक मौक़अ़ पर मुबल्लिग़ को हिम्मत से काम लेते हुए उन के रवय्ये को नज़र अन्दाज़ कर के अपने मक़्सद के ह़ुसूल की त़रफ़ मु-तवज्जेह होना चाहिये। जैसा कि अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के अन्दाज़ से हमें दर्स मिलता है।

(ह़िकायत : 14)
मौलाना कोई नई बात सुनाओ

दा'वते इस्लामी की इब्तिदा में एक बार अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه बाबुल मदीना (कराची) के अ़लाक़े न्यू कराची

www.dawateislami.net

की एक मस्जिद में बयान फ़रमा रहे थे। सामेईन में एक बूढ़ा शख़्स भी मौजूद था उस ने आव देखा न ताव और दौराने बयान ही एक दम बोला : **अरे मौलाना ! येह बातें तो हम सुनते ही रहते हैं कोई नई बात भी सुनाओ ।**'' अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने उस शख़्स की इस दीदा दिलेरी पर किसी क़िस्म के ग़ुस्से का इज़्हार नहीं फ़रमाया बल्कि बयान का मौज़ूअ़ तब्दील फ़रमा कर अपने बयान को मुकम्मल फ़रमाया।

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ग़ौर फ़रमाइये ! अगर दौराने बयान कोई किसी को टोक दे तो अच्छा भला आदमी भी घबरा जाता है। ऐसी सूरत में सब्र से काम ले कर क़ुव्वते बरदाश्त का मुज़ा-हरा करना चाहिये और अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के अ़ता कर्दा म-दनी इन्आ़मात में से म-दनी इन्आ़म नम्बर 28 : ''आज आप ने (घर में या बाहर) किसी पर ग़ुस्सा आ जाने की सूरत में चुप साध कर ग़ुस्से का इ़लाज फ़रमाया या बोल पड़े ? नीज़ दर गुज़र से काम लिया या इन्तिक़ाम (या'नी बदला लेने) का मौक़अ़ ढूंडते रहे ?'' पर अ़मल करना चाहिये।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(ह़िकायत : 15)
नमाज़ की फ़िक्र

एक बार अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه जश्ने

www.dawateislami.net

विलादत के म-दनी जुलूस में आ़शिक़ाने रसूल के हमराह शरीक थे। सलातो सलाम पढ़ता और मरह़बा या मुस्त़फ़ा के ना'रे लगाता आ़शिक़ाने रसूल का ठाठें मारता समुन्दर रवां दवां था। अचानक एक शख़्स आगे बढ़ा और उस ने अफ़्शां की भरी शीशी अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه पर उंडेल दी। आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के मुंह से बे साख़्ता "या ग़ौस पाक" का ना'रा बुलन्द हो गया। यूं महसूस हो रहा था कि अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه सख़्त परेशान हो गए हैं। चन्द लम्ह़ों के बा'द आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने फ़रमाया : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मुआ़फ़ फ़रमाए ! उस इस्लामी भाई ने मेरी बहुत दिल आज़ारी की, वोह बेचारा जानता नहीं था कि अफ़्शां जिस्म पर लगने की सूरत में वुज़ू का क्या मस्अला है। बिल आख़िर न चाहते हुए अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने जुलूस तर्क फ़रमाया, बड़ी तगो दौ के बा'द अफ़्शां से पीछा छुड़ाया और नमाज़े अ़स्र वक़्त में अदा फ़रमाई। इस वाक़िए़ को तक़रीबन दस बारह साल हो चुके हैं।

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मुसल्मानों की एक ता'दाद है जो नमाज़ से दूर है और बा'ज़ ऐसे नमाज़ी भी हैं कि जो मुख़्तलिफ़ तक़रीबात में शिर्कत के बहाने مَعَاذَاللّٰه जमाअ़त तो जमाअ़त नमाज़ ही क़ज़ा कर देते हैं। शैख़े त़रीक़त अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के इस वाक़िए़ में दर्स है कि सब से पहले नमाज़ और इस के बा'द कोई दूसरा काम किया जाए। येह भी याद

www.dawateislami.net

रहे कि वुज़ू के मुआ़-मले में बहुत एह़तियात़ की ज़रूरत है कहीं कोई चीज़ अफ़्शां वग़ैरा लगी रह गई तो वुज़ू न होगा जैसा कि सदरुश्शरीअ़ह, मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : माथे पर अफ़्शां चुनी हो तो छुड़ाना ज़रूरी है। (बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 318) अफ़्शां या टिक्ली वुज़ू व ग़ुस्ल के अदा में मानेअ़ हैं। (फ़तावा अम्जदिय्या, जि. 4, स. 60) अलबत्ता अफ़्शां का काम करने वाले के जिस्म पर अफ़्शां इस त़रह़ लगी रही कि छुड़ाने में तक्लीफ़ हो तो ज़रूरतन उस का वुज़ू और ग़ुस्ल हो जाएगा।

(वक़ारुल फ़तावा, जि. 2, स. 2 मुलख़्ख़सन)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(ह़िकायत : 16)
पसन्दीदा चीज़ पेश कीजिये

एक बार अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने घर में कुछ खाना तय्यार करने का फ़रमाया ताकि सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में नज़्र किया जा सके। खाना तय्यार किया गया। अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने खाना देख कर फ़रमाया : येह सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में नज़्र नहीं किया जाएगा। घर वालों की ह़ैरानी दूर करते हुए कुछ यूं इर्शाद फ़रमाया : इस खाने में एक ऐसी शै मौजूद है

www.dawateislami.net

जिसे मैं पसन्द नहीं करता, और मैं येह गवारा नहीं कर सकता कि जो शै ख़ुद पसन्द न हो उसे आक़ाए दो जहां صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में नज़्र करूं।

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! वाक़ेई जब भी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की राह में कोई चीज़ ख़र्च करें या बुज़ुर्गों की नज़्रो नियाज़ करें हमेशा उ़म्दा और अपनी पसन्दीदा चीज़ ही पेश करें। जैसा कि हमारे बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللّٰهُ الْمُبِيْن का त़रीक़ा रहा है कि वोह राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में अपनी मह़बूब तरीन चीज़ें ख़र्च किया करते थे चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में शकर की बोरियां ख़रीद कर स-दक़ा किया करते थे। उन से कहा गया : इस की क़ीमत ही क्यूं नहीं स-दक़ा कर देते ? फ़रमाया : शकर मुझे मह़बूब व मरग़ूब है और मैं येह चाहता हूं कि राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में अपनी प्यारी चीज़ ख़र्च करूं।

(تفسیرِ قرطبی،پ٤،اٰلِ عمران،تحت الآیۃ:٩٢،١٠١/٢،جزء:٤)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हमें भी अपनी पसन्दीदा चीज़ों को राहे ख़ुदा में ख़र्च करने की सआ़दत अ़त़ा फ़रमाए।

اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمین صَلَّى اللّٰه تعالٰى عليه واٰلهٖ وسلَّم

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(ह़िकायत : 17)
इमाम साह़िब ने हाथ न मिलाया

येह उन दिनों का वाक़िआ़ है जब अमीरे अहले सुन्नत

www.dawateislami.net

دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه बाबुल मदीना कराची के मुख़्तलिफ़ अ़लाक़ो में जा जा कर सुन्नतों भरे बयानात के ज़रीए नेकी की दा'वत को आ़म किया करते थे। **एक बार** अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه बाबुल मदीना कराची के अ़लाक़े मलीर की एक मस्जिद में बयान फ़रमाने के लिये तशरीफ़ ले गए। नमाज़े इ़शा के बा'द आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने ख़ुद ही बयान का ए'लान फ़रमाया। अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने नमाज़ के बा'द बयान शुरूअ़ करने से क़ब्ल इमाम साहिब से मुसा-फ़हा करने के लिये जूं ही हाथ बढ़ाए इमाम साहिब ने बे रुख़ी से मुंह फैर लिया और हाथ न मिलाया। शायद उन्हें अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के बारे में कोई ग़लत फ़हमी हो गई थी। अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने इमाम साहिब के इस रवय्ये पर किसी क़िस्म की ना गवारी का इज़्हार नहीं फ़रमाया बल्कि सब्रो तहम्मुल का मुज़ा-हरा करते हुए हिक्मते अ़-मली से नमाज़ियों को जम्अ़ किया और सुन्नतों भरा बयान शुरूअ़ कर दिया। जब आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه बयान से फ़ारिग़ हुए तो वोही इमाम साहिब आगे बढ़े और अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه का हाथ पकड़ कर अपने साथ हुजरे में ले गए, ख़ूब शफ़्क़तों से नवाज़ा और चाय से तवाज़ोअ़ फ़रमाई। शैख़े त़रीक़त अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه फ़रमाते हैं : इस

www.dawateislami.net

वाक़िए के बा'द उन इमाम साह़िब से जब भी मुलाक़ात हुई वोह बेह़द मह़ब्बत से मिले और हर बार शफ़्क़तों से नवाज़ा।

बुराई का बदला भलाई से दीजिये

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हमें हमेशा नरमी और हुस्ने अख़्लाक़ ही से पेश आना चाहिये कि हमारे प्यारे आक़ा صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने हमेशा बुराई का जवाब अच्छाई से ही दिया। याद रखिये ! ज़रूरी नहीं कि हम किसी से मुस्कुरा कर मिलें तो वोह भी ख़न्दा पेशानी से हमारा इस्तिक़्बाल करे, बल्कि मुम्किन है कि मुख़ात़ब हमारी मुस्कुराहट को त़न्ज़ समझ कर त़ैश में ही आ जाए और हमें ख़न्दा रूई के जवाब में यूं सुनना पड़े : आप क्यूं हंसते हैं ? चुनान्चे ऐसे मौक़अ़ पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का येह फ़रमान पेशे नज़र रखना चाहिये :

وَلَا تَسْتَوِی الْحَسَنَةُ وَلَا السَّیِّئَةُ ؕ اِدْفَعْ بِالَّتِیْ هِیَ اَحْسَنُ فَاِذَا الَّذِیْ بَیْنَكَ وَ بَیْنَهٗ عَدَاوَةٌ كَاَنَّهٗ وَلِیٌّ حَمِیْمٌ ﴿۳۴﴾

(پ۲۴، حٰم السجدة، آیت:۳۴)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और नेकी और बदी बराबर न हो जाएंगी ऐ सुनने वाले बुराई को भलाई से टाल जभी वोह कि तुझ में और उस में दुश्मनी थी ऐसा हो जाएगा जैसा कि गहरा दोस्त।

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

www.dawateislami.net

(ह़िकायत : 18)
ईंट का जवाब पथ्थर से न दीजिये

अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه एक बार ह़ज के लिये मक्कए मुकर्रमा زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًا وَّتَعْظِيْمًا हाज़िर थे। ग़ालिबन ग्यारह ज़ुल हिज्जतुल ह़राम को आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه जमरात की रमी (या'नी शैत़ान को कंकरियां मारने) के लिये मिना शरीफ़ जा रहे थे। दौराने सफ़र एक बूढ़ा शख़्स मिला उस ने अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه से कहा : मौलाना ! मेरी त़रफ़ से भी कंकरियां मार देना। अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने कुछ यूं इर्शाद फ़रमाया : बड़े मियां आप अपने हाथ से कंकरियां क्यूं नहीं मार लेते ? उस ने जवाब दिया : बीमार व मजबूर शख़्स के लिये तो रुख़्सत है कि किसी से रमी करवा ले। अमीरे अहले सुन्नत ने फ़रमाया : आप तो مَاشَآءَاللّٰه सिह्ह़त मन्द मा'लूम हो रहे हैं। अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की बात सुन कर उस ने कहा : अच्छा ! मैं ने कल जो दूसरे आदमी से रमी करवाई वोह क्या ग़लत़ किया था ? अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने फ़रमाया : जी ! हां जो शख़्स चलने फिरने पर क़ादिर हो वोह अगर दूसरे से रमी करवाए तो उस पर दम वाजिब हो जाता है। आप ने बा वुजूदे कुदरत किसी से कंकरियां फिंकवा दीं इस लिये आप के लिये भी येही हुक्म है। अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की बात सुनते

www.dawateislami.net

ही उस की हालत ऐसी हो गई कि गोया उस पर कोई पहाड़ टूट पड़ा हो। वोह फ़ौरन आपे से बाहर हो गया और डांटते हुए चिल्ला कर बोला : "अपना मस्अला अपने पास रख ! ख़्वाह म ख़्वाह में दम वाजिब हो गया।" येह कह कर वोह चला गया। अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने उस के इस जारिहाना अन्दाज़ पर किसी क़िस्म के जज़्बाती पन का मुज़ा-हरा नहीं फ़रमाया बल्कि आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने सब्र का जाम नोश फ़रमाया। इस पर जिद्दा शरीफ़ के एक इस्लामी भाई (जो उस वक़्त आप के साथ थे) ने अ़र्ज़ की : आप को उस बूढ़े शख़्स की बद अख़्लाक़ी पर ग़ुस्सा नहीं आया ? अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने फ़रमाया : اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ दा'वते इस्लामी का म-दनी माहोल हमें येही सिखाता है कि कोई कैसा ही सख़्त रवय्या इख़्तियार करे हमें हर हाल में सब्र और नरमी ही इख़्तियार करनी चाहिये।

है फ़लाहो कामरानी नरमी व आसानी में हर बना काम बिगड़ जाता है नादानी में

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(हिकायत 19)
बद कलामी पर सब्र

एक मर्तबा अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه एक मस्जिद में दाढ़ी शरीफ़ रखने के फ़ज़ाइल और मुंडवाने की वईदें और इ़ब्रत नाक वाक़िआ़त बयान फ़रमा रहे थे। इत्तिफ़ाक़ से

www.dawateislami.net

ह़ाज़िरीन में कोई दुन्यवी शख़्सिय्यत भी मौजूद थी जिस के साथ उस के चन्द हम-नवा भी मौजूद थे । अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने दौराने बयान मस्अला बयान फ़रमाया कि "**दाढ़ी मुंडवाना ह़राम है ।**" आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه बयान कर के जूंही फ़ारिग़ हुए वोह शख़्स ग़ुस्से में लाल पीला हो चुका था : बिफरे हुए अन्दाज़ में बोला : शराब ह़राम, चोरी ह़राम येह तो सुना था । दाढ़ी मुंडवाना ह़राम येह किस किताब में लिखा है ? मुझे वोह किताब दिखाओ ? अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने ठन्डे लहजे में जवाब दिया : "मेरे पास इस वक़्त किताब तो नहीं है, अलबत्ता मैं आप को येह मस्अला जल्द ही किताब से दिखा दूंगा ।" उस ने रो'बदार लहजे में कहा : नहीं ! अभी दिखाओ । माना जूआ ह़राम, बदकारी ह़राम, डकैती ह़राम । दाढ़ी मुंडवाना ह़राम तुम ने कैसे कह दिया । अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه उसे नरमी से समझाते रहे जनाब ! येह मस्अला किताबों में इसी त़रह़ लिखा हुवा है, मेरे पास इस वक़्त किताब मौजूद नहीं मैं आप को दिखा दूंगा । मगर उस की एक ही रट थी मैं न मानूं ! अभी किताब दिखाओ । बिल आख़िर अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने उस से उलझे बिग़ैर ह़िक्मते अ़-मली से तरकीब बनाई और मुआ़-मला ख़त्म फ़रमाया ।

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! यक़ीनन नेकी की दा'वत

www.dawateislami.net

देते हुए सख़्त कलामी इख़्तियार करना इन्तिहाई नुक़्सान देह है। अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه उस शख़्स के जारिहाना रवय्ये के बा वुजूद नरमी से ही पेश आए। बा'ज़ लोगों के समझाने का अन्दाज़ कुछ यूं होता है कि मियां इतने बड़े हो गए हो तुम्हें अ़क़्ल नहीं है, अज़ान हो रही है तुम नमाज़ के लिये नहीं आते, यार ! तुम तो निरे बुध्धू हो, तुम्हारा दिमाग़ तो बिल्कुल ख़राब हो गया है, जहन्नम में जाओगे वग़ैरा वग़ैरा। येह अन्दाज़ सख़्त है इसे बिल्कुल पज़ीराई नहीं, ऐसे त़रीक़े छोड़ने और ख़ुश अख़्लाक़ी अपनाने में ही भलाई है।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(ह़िकायत : 20)
दाढ़ी की मुख़ा-लफ़त करने वाला

दा'वते इस्लामी के अवाइल की बात है : अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه दाढ़ी शरीफ़ रखने के मौज़ूअ़ पर बयान फ़रमा रहे थे कि दौराने बयान एक बूढ़ा शख़्स खड़ा हुवा, उस ने लोगों की परवाह किये बिग़ैर इन्तिहाई बेहूदा अन्दाज़ में बुलन्द आवाज़ से बोलना शुरूअ़ कर दिया : ओए मुल्लां ! सुन ! ह़दीस में है कि **रसूलल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने पहले सह़ाबए किराम को दाढ़ी रखने का हुक्म दिया था फिर काफ़िरों के मज़ालिम से बचने के

www.dawateislami.net

लिये दाढ़ियां मुंडवाने का हुक्म दे दिया था । (مَعَاذَاللہ) अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ ने उस की बात के दौरान ही इर्शाद फ़रमाया : मुझे ऐसी कोई ह़दीस नहीं सुननी जो आज तक मुह़द्दिसीने किराम को नज़र ही नहीं आई । क्यूं कि ह़दीस में तो है : सरकारे दो आ़लम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان को हुक्म दिया : "मूंछें पस्त करो, दाढ़ियों को मुआ़फ़ी दो और यहूदियों की सी सूरत मत बनाओ" (شرح معانی الآثار للطحاوی،کتاب الکراھۃ،باب حلق الشارب، ٤/٢٨،حدیث:٦٤٢٤) अब आप دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ ने उस की जानिब इल्तिफ़ात न फ़रमाया और अपना बयान इसी त़रह़ जारी रखा । अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ फ़रमाते हैं : **अल्लाह** करे वोह बूढ़ा तौबा कर चुका हो ।

ह़दीस के मुआ़-मले में एह़तियात़ लाज़िम है

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इ़ल्मे दीन से दूरी की वज्ह से बा'ज़ लोगों की आ़दत होती है कि बिग़ैर सोचे समझे अपनी अटकल से कोई बात कह देते हैं और उसे सरकार صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की त़रफ़ मन्सूब कर देते हैं कि सरकार صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने यूं इर्शाद फ़रमाया है, याद रखिये ! किसी भी ऐसी बात को सरकार صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की त़रफ़ मन्सूब करना जो आप ने न कही हो येह आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर

www.dawateislami.net

इफ़्तिरा (झूट बांधना) है और ऐसे शख़्स के लिये ह़दीसे पाक में सख़्त वईद है चुनान्चे

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से मरवी है कि नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जब तक तुम्हें इ़ल्म न हो मेरी त़रफ़ से ह़दीस बयान करने से बचो, जिस ने जान बूझ कर मेरी त़रफ़ झूट मन्सूब किया वोह अपना ठिकाना जहन्नम में बना ले। (ترمذی، کتاب تفسیر القرآن عن رسول اللّٰہ، باب ماجاء فی الذی یفسر القرآن برایہ، ٤/٤٣٩، حدیث: ٢٩٦٠)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(ह़िकायत : 21)
आ'ला ह़ज़रत की क़ियाम गाह का अदब

1420 हि. ब मुत़ाबिक़ 1999 सि.ई. अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ नेकी की दा'वत आ़म करने के सिल्सिले में अजमेर शरीफ़ (हिन्द) ह़ाज़िर हुए। एक इस्लामी भाई ने आप دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ के क़ियाम का इन्तिज़ाम ऐसे मकान में किया जिस के बारे में मश्हूर था कि **आ'ला ह़ज़रत इमामे अहले सुन्नत शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الرَّحْمٰن ने भी यहां क़ियाम फ़रमाया था। अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ ने येह फ़रमाते हुए उस मकान में ठहरने से इन्कार कर दिया कि जिस मक़ाम पर **आ'ला ह़ज़रत**

www.dawateislami.net

इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحمَةُ الرَّحْمٰن ने क़ियाम फ़रमाया हो उस जगह ठहरना मुझे अपने लिये ख़िलाफ़े अदब मह़सूस होता है। उस इस्लामी भाई के इसरार के बा वुजूद आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने उस कमरे में ठहरने से मा'ज़िरत फ़रमाई और उस के सामने वाले कमरे में क़ियाम फ़रमाया।

एक इस्लामी भाई ने आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه से अ़र्ज़ की : हुज़ूर ! आप ऊपर वाली मन्ज़िल में तशरीफ़ ले चलिये वोह कमरा इस से बड़ा भी है और हवादार भी। अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने इर्शाद फ़रमाया : **आ'ला ह़ज़रत** رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه जिस मकान में तशरीफ़ फ़रमा हुए हों उस के ऊपर वाली मन्ज़िल पर जाना भी मेरे नज़्दीक बे अ-दबी है। आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने जितने दिन वहां क़ियाम फ़रमाया अदब की वज्ह से एक बार भी ऊपर वाली मन्ज़िल में नहीं गए।

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की आ़रिज़ी क़ियाम गाह का भी किस क़दर अ-दबो एह़तिराम फ़रमाते हैं। **अल्लाह** वालों का शुरूअ़ से ही त़रीक़ा रहा है कि अपने उस्ताज़, पीरो मुर्शिद का अ-दबो एह़तिराम करने के साथ साथ हर उस चीज़ की ता'ज़ीम बजा लाते थे जिस को किसी भी त़रह़ से बुज़ुर्गों से निस्बत ह़ासिल हो चुनान्चे

www.dawateislami.net

बुज़ुर्गों की औलाद का अदब

शैख़ुल इस्लाम, ह़ज़रते अ़ल्लामा बुरहानुद्दीन ज़रनूजी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : बुख़ारा के आइम्मा में से एक बुलन्द पाया इमाम का वाक़िआ़ है : एक मर्तबा वोह इ़ल्मे दीन की एक मजलिस में तशरीफ़ फरमा थे कि यकायक उन्हों ने बार बार खड़ा होना शुरूअ़ कर दिया, लोगों ने उन से इस की वज्ह पूछी तो फ़रमाया : मेरे उस्तादे मोह़तरम का साह़िब ज़ादा बच्चों के साथ खेल रह था, कभी कभी खेलता हुवा वोह मस्जिद की त़रफ़ आ निकलता, पस जब मेरी नज़र उस पर पड़ती तो मैं अपने उस्ताद की ता'ज़ीम के लिये खड़ा हो जाता। (تعلیم المتعلم طریق التعلم ،ص۲۳)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(ह़िकायत : 22)
आंखों का बोसा

अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه एक बार **''मदीनतुल मुर्शिद बरेली शरीफ़''** (हिन्द) ह़ाज़िर हुए। किसी ने वहां मौजूद एक ज़ईफ़ुल उ़म्र बुज़ुर्ग के मु-तअ़ल्लिक़ बताया कि इन्हों ने **आ'ला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن की ज़ियारत की है। अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه फ़र्ते मह़ब्बत में खड़े हुए

www.dawateislami.net

और न सिर्फ़ उन की आंखों का बोसा लिया बल्कि झुक कर उन के क़दमों को भी चूम लिया।

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अगर दुन्या व आख़िरत में काम्याबी की ख़्वाहिश है तो बुज़ुर्गों के अदब को अपने ऊपर लाज़िम कर लीजिये क्यूं कि अदब ही काम्याबी की कुन्जी है और इसी से सब कुछ मिलता है जैसा कि मन्कूल है : "जिस ने जो कुछ पाया अ-दबो एह़तिराम करने के सबब से ही पाया और जिस ने जो कुछ खोया वोह अ-दबो एह़तिराम न करने के सबब ही खोया।"

(تعلیم المتعلم طریق التعلم ،ص ۲۱)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आज के इस पुर फ़ितन दौर में शरीअ़त व त़रीक़त की जामेअ़ शख़्सिय्यत, शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार** क़ादिरी र-ज़वी دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ की ज़ात **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बहुत बड़ी ने'मत है। जिन की सोह़बत से अ़मल में इज़ाफ़ा और आख़िरत की तय्यारी का ज़ेह़न बनता है। **हुक़ूक़ुल्लाह** और हुक़ूक़ुल इ़बाद की बजा आ-वरी की त़रफ़ त़बीअ़त माइल होती है। मज़ीद मा'लूमात के लिये मक-त-बतुल मदीना से वक़्तन फ़ वक़्तन शाएअ़ होने वाले अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ की ह़याते मुबा-रका से

www.dawateislami.net

मु-तअ़ल्लिक़ कुतुबो रसाइल का ज़रूर मुत़ा-लआ़ फ़रमाइये ।

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

आप भी म-दनी माह़ोल से वाबस्ता हो जाइये

येह ह़क़ीक़त है कि सोह़बत असर रखती है, इन्सान अपने दोस्त की आ़दात व अख़्लाक़ और अ़क़ाइद से ज़रूर मु-तअस्सिर होता है । ह़दीसे पाक में नेक आदमी की मिसाल मुश्क वाले की त़रह़ बयान की गई है कि अगर उस से कुछ न भी मिले तो उस की हम-नशीनी ख़ुश्बू में महक्ने का सबब बनती है जब कि बुरा आदमी भट्टी वाले की त़रह़ है कि अगर भट्टी की आग न भी पहुंचे फिर भी उस की बदबू और धूआं तो पहुंचता ही है । गुनाहों की आग में जलते, गुमराहिय्यत के बादलों में घिरे इस मुआ़-शरे में सुन्नतों की ख़ुश्बूएं फैलाता दा'वते इस्लामी का म-दनी माह़ोल किसी ने'मत से कम नहीं । اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ इस म-दनी माह़ोल में तरबियत पा कर सुन्नतें अपनाने वाला इस त़रह़ ज़िन्दगी बसर करने लगता है कि न सिर्फ़ हर आंख का तारा बन जाता है बल्कि अपने सुन्नतों भरे किरदार से कई लोगों की इस्लाह़ का सबब भी बन जाता है । फिर ज़िन्दगी की मीआ़द पा कर इस शानो शौकत से दारे आख़िरत रवाना होता है कि देखने सुनने वाले रश्क करने और ऐसी ही मौत की आरज़ू करने लगते हैं । आप भी तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की

www.dawateislami.net

आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक दा'वते इस्लामी के म-दनी माह़ोल से वाबस्ता हो जाइये । दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में शिर्कत, राहे ख़ुदा के **म-दनी क़ाफ़िलों** में सफ़र और शैख़े त़रीक़त अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के अ़त़ा कर्दा **म-दनी इन्आ़मात** पर अ़मल को अपना मा'मूल बना लीजिये, اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ दोनों जहां की सआ़दतें नसीब होंगी ।

ग़ौर से पढ़ कर येह फ़ॉर्म पुर कर के तफ़्सील लिख दीजिये

जो इस्लामी भाई **फ़ैज़ाने सुन्नत** या **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के दीगर **कुतुबो रसाइल** सुन या पढ़ कर, बयान की **केसिट** सुन कर या हफ़्तावार, सूबाई व बैनल अक़्वामी **इज्तिमाआ़त** में शिर्कत या **म-दनी क़ाफ़िलों** में सफ़र या **दा'वते इस्लामी** के किसी भी म-दनी काम में शुमूलिय्यत की ब-र-कत से म-दनी माह़ोल से वाबस्ता हुए, ज़िन्दगी में **म-दनी इन्क़िलाब** बरपा हुवा, नमाज़ी बन गए, दाढ़ी, इ़मामा वग़ैरा सज गया, आप को या किसी अ़ज़ीज़ को हैरत अंगेज़ त़ौर पर **सिह़्ह़त** मिली, परेशानी दूर हुई, या मरते वक़्त **कलिमए त़य्यिबा** नसीब हुवा या अच्छी ह़ालत में **रूह़ क़ब्ज़** हुई, मर्ह़ूम को अच्छी ह़ालत में ख़्वाब में देखा, बिशारत वग़ैरा हुई या **ता'वीज़ाते अ़त्तारिय्या** के ज़रीए

www.dawateislami.net

आफ़ात व बलिय्यात से नजात मिली हो तो हाथों हाथ इस फ़ॉर्म को पुर कर दीजिये और एक सफ़्हे पर वाक़िए़ की तफ़्सील लिख कर इस पते पर भिजवा कर एह़सान फ़रमाइये "**मजलिसे म-दनी बहारें** मक-त-बतुल मदीना, फ़ैज़ाने मदीना, त्री कोनिया बग़ीचे के पास, मिरज़ापूर, अह़मदआबाद, गुजरात।"

नाम मअ़ वल्दिय्यत :.....

उ़म्र..... किन से मुरीद या त़ालिब हैं.....

ख़त़ मिलने का पता.....

फ़ोन नम्बर (मअ़ कोड) :..... ई-मेइल एड्रेस :.....

..... इन्क़िलाबी केसिट

या रिसाले का नाम : .....सुनने, पढ़ने या

वाक़िआ़ रूनुमा होने की तारीख़/महीना/साल :.....

कितने दिन के म-दनी क़ाफ़िले में सफ़र किया :.....

मौजूदा तन्ज़ीमी ज़िम्मादारी :. .....

मुन-द-रजए बाला ज़राएअ़ से जो ब-र-कतें ह़ासिल हुईं, फुलां फुलां बुराई छूटी वोह तफ़्सीलन और पहले के अ़मल की कैफ़िय्यत (अगर इ़ब्रत के लिये लिखना चाहें) म-सलन फ़ेशन परस्ती, डकैती वग़ैरा और **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की ज़ाते मुबा-रका से ज़ाहिर होने वाली **ब-रकात व करामात** के "**ईमान अफ़रोज़ वाक़िआ़त**" मक़ाम व तारीख़ के साथ एक सफ़्हे पर **तफ़्सीलन तह़रीर फ़रमा दीजिये।**

www.dawateislami.net

म-दनी मश्वरा

اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ शैखे़ त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी** र-ज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه दौरे ह़ाज़िर की वोह यगानए रोज़गार हस्ती हैं कि जिन से श-रफ़े बैअ़त की ब-र-कत से लाखों मुसल्मान गुनाहों भरी ज़िन्दगी से ताइब हो कर **अल्लाहु रह़मान** عَزَّوَجَلَّ के अह़काम और उस के **प्यारे ह़बीबे** लबीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सुन्नतों के मुत़ाबिक़ पुर सुकून ज़िन्दगी बसर कर रहे हैं। ख़ैर ख़्वाहिये मुस्लिम के मुक़द्दस जज़्बे के तह़्त हमारा **म-दनी मश्वरा** है कि अगर आप अभी तक किसी जामेअ़ शराइत़ पीर साह़िब से बैअ़त नहीं हुए तो शैखे़ त़रीक़त **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के फ़ुयूज़ो ब-रकात से मुस्तफ़ीद होने के लिये इन से **बैअ़त** हो जाइये। اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ दुन्या व आख़िरत में काम्याबी व सुर्ख़-रूई नसीब होगी।

मुरीद बनने का त़रीक़ा

अगर आप मुरीद बनना चाहते हैं, तो अपना और जिन को **मुरीद या त़ालिब** बनवाना चाहते हैं उन का नाम नीचे तरतीब वार मअ़ वल्दिय्यत व उ़म्र लिख कर **''मजलिसे मक्तूबातो ता'वीज़ाते अ़त्त़ारिय्या फ़ैज़ाने मदीना, टनटन पुरा स्ट्रीट खड़क**

www.dawateislami.net

मुम्बई-9'' के पते पर रवाना फ़रमा दें, तो اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ उन्हें भी सिल्सिलए **क़ादिरिय्या र-ज़विय्या अ़त्तारिय्या** में दाख़िल कर लिया जाएगा। (पता अंग्रेज़ी के केपीटल हुरूफ़ में लिखें)

E.Mail : attar@dawateislami.net

(1) नाम व पता बॉलपेन से और बिल्कुल साफ़ लिखें, ग़ैर मश्हूर नाम या अल्फ़ाज़ पर लाज़िमन ए'राब लगाएं। अगर तमाम नामों के लिये एक ही पता काफ़ी हो तो दूसरा पता लिखने की ह़ाजत नहीं। (2) एड्रेस में मह़रम या सर परस्त का नाम ज़रूर लिखें (3) अलग अलग मक्तूबात मंगवाने के लिये जवाबी लिफ़ाफ़े साथ ज़रूर इरसाल फ़रमाएं।

नम्बोर शुमार	नाम	मर्द/ औ़रत	बिन/ बिन्ते	बाप का नाम	उ़म्र	मुकम्मल एड्रेस

म-दनी मश्वरा : इस फ़ॉर्म को मह़फ़ूज़ कर लें और इस की मज़ीद कॉपियां करवा लें।

www.dawateislami.net

फ़ेहरिस्त

उ़न्वान	स.	उ़न्वान	स.
सब्र व शुक्र के पैकर	1	अनोखी एह़तियात़	27
दुरूदे पाक की फ़ज़ीलत	3	समझाने का बेहतरीन त़रीक़ा	28
मौलाना और चाय मंगवा दूं	3	उंग्लियां चटख़ाना और तश्बीक	29
रिज़्क़ की क़द्र	4	बरदाश्त की क़ुव्वत पैदा कीजिये	30
अमीरे अहले सुन्नत और		मौलाना कोई नई बात सुनाओ	30
नेकी की दा'वत	7	नमाज़ की फ़िक्र	31
बद मआ़श की तौबा	7	पसन्दीदा चीज़ पेश कीजिये	33
मज़दूर को नमाज़ की दा'वत	9	इमाम साहिब ने हाथ न मिलाया	34
इ़यादत की तरग़ीब	9	बुराई का बदला भलाई से दीजिये	36
कम नम्बर वालों को तोह़फ़ा	11	ईंट का जवाब पथ्थर से न दीजिये	37
शादी में फ़िक्रे आख़िरत का अन्दाज़	13	बद कलामी पर सब्र	38
सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ की ईद	14	दाढ़ी की मुख़ा-लफ़त करने वाला	40
मस्जिद की सफ़ाई का एहतिमाम	15	ह़दीस के मुआ़-मले में	
माले वक़्फ़ की ह़िफ़ाज़त	19	एह़तियात़ लाज़िम है	41
फ़ारूक़े आ'ज़म की ज़ौजा और		आ'ला ह़ज़रत की	
ख़ुश्बू का वज़्न	20	क़ियाम गाह का अदब	42
पैकरे शर्मो ह़या	21	बुज़ुर्गों की औलाद का अदब	44
नर्स से इन्जेक्शन नहीं लगवाया	23	आंखों का बोसा	44
क्या औ़रत डॉक्टर के पास		आप भी म-दनी माह़ोल से	
जा सकती है ?	24	वाबस्ता हो जाइये	46
औ़रत का मर्द से इन्जेक्शन लगवाना	24	ग़ौर से पढ़ कर येह फ़ॉर्म पुर कर के	
मर्द का नर्स से इन्जेक्शन लगवाना	25	तफ़्सील लिख दीजिये	47
सर में लोहे की कील	25	म-दनी मश्वरा	49
निगाहों की ह़िफ़ाज़त के लिये		मुरीद बनने का त़रीक़ा	49
"ह़िमा" क़ाइम फ़रमाई	25		
सच्चा वरअ़	26		

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

नेक नमाज़ी बनने के लिये

हर जुमा'रात बा'द नमाज़े इ़शा आप के यहां होने वाले **दा'वते इस्लामी** के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में रिज़ाए इलाही के लिये अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ सारी रात शिर्कत फ़रमाइये ۞ सुन्नतों की तरबियत के लिये **म-दनी क़ाफ़िले** में आ़शिक़ाने रसूल के साथ हर माह तीन दिन सफ़र और ۞ रोज़ाना "**फ़िक्रे मदीना**" के ज़रीए **म-दनी इन्आ़मात** का रिसाला पुर कर के हर म-दनी माह की पहली तारीख़ में अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लीजिये।

मेरा म-दनी मक़्सद : "**मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है।** اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ " अपनी इस्लाह़ के लिये "**म-दनी इन्आ़मात**" पर अ़मल और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश के लिये "**म-दनी क़ाफ़िलों**" में सफ़र करना है।

मक-त-बतुल मदीना®
दा'वते इस्लामी
फ़ैज़ाने मदीना, त्री कोनिया बग़ीचे के पास, मिरज़ापूर, अहमदआबाद-1, गुजरात, इन्डिया
Mo.091 93271 68200 E-mail : maktabaahmedabad@gmail.com www.dawateislami.net